بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -23
Issue - 01

राह-ए-ईमान

जनवरी
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
नईमुल हक़ क़ुरैशी

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद
राएफ़ अहमद मलकाना

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी........ 3
4. रूहानी ख़ज़ायन........4
5. सम्पादकीय........6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः 04-12-2020........08
7. मानवता के अस्तित्व के लिए ख़ुदा तआला से संबंध तथा प्रेम आवश्यक है...12
8. विश्व शांति के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस के विश्वव्यापी प्रयास.....15
9. मानवता की सेवा, जलसा सालाना क़ादियान, तालीम-उल-इस्लाम स्कूल........19
10. सिलसिला अहमदिया (जिल्द-1)........21
11. विज्ञान की रोचक जानकारी........24
12. मिर्क़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन (ख़लीफा अव्वल की जीवनी)............26
13. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है........29

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

अनुवाद:- और यदि वे उसी प्रकार ईमान ले आएं जैसे तुम उस पर ईमान लाए हो तो निसंदेह वह भी हिदायत पा गए और अगर वह (उससे) मुंह फेर लें तो वह स्वभाविक रूप से हमेशा मतभेद में ही लगे रहते हैं। अत: अल्लाह तुझे उनसे निपटने के लिए पर्याप्त है और वही बहुत सुनने वाला और शाश्वत ज्ञान रखने वाला है। (सूर: बक़र: - 138)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि अल्लाह की क़सम हमने 6 दिन तक सूरज नहीं देखा फिर एक व्यक्ति ने अगले जुमा उसी द्वार से प्रवेश किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े ख़ुत्बा दे रहे थे। वह आपके सम्मुख खड़ा हुआ और संबोधित किया कि हे अल्लाह के रसूल माल तबाह हो रहे हैं, रास्ते टूट रहे हैं, आप अल्लाह तआला से दुआ करें कि वह वर्षा को रोक ले। रावी कहते हैं कि इस पर रसूलुल्लाह ने अपने दोनों हाथ दुआ के लिए उठाए फिर दुआ की: - हे अल्लाह हमारे इर्द-गिर्द तो बारिश हो परंतु हमारे ऊपर बारिश न हो। हे अल्लाह चोटियों और पहाड़ों और चट्यल मैदानों और घाटियों और जंगलों में पानी बरसा। रावी वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दुआ करना था कि बारिश रुक गई और जब नमाज जुमा पढ़कर निकले तो धूप निकली हुई थी। (बुख़ारी किताबुल जुमा बाबुल इस्तिस्क़ा...)

☆ ☆ ☆

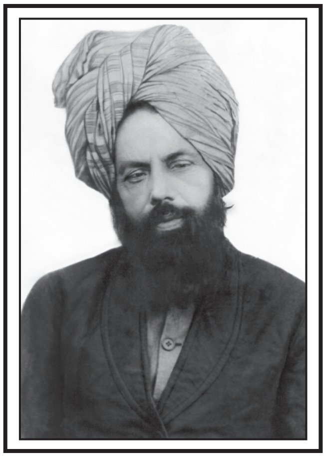

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

दुआ का क़ुबूल होना

"पांचवां निशान जो इन दिनों में प्रकट हुआ वह एक दुआ का स्वीकार होना है जो वास्तव में मुर्दों को जीवित करने में सम्मिलित है। इस संक्षेप का विस्तार यह है कि अब्दुलकरीम पुत्र अब्दुर्रहमान निवासी हैदराबाद दकन हमारे स्कूल में एक लड़का विद्यार्थी है भाग्य से उसे एक पागल कुत्ते ने काट लिया। हमने उसे उपचार हेतु कसौली भेज दिया। कुछ दिनों तक उसका कसौली में उपचार होता रहा फिर वह क़ादियान वापस आया। थोड़े दिन गुज़रने के पश्चात् उसमें वे पागलपन के लक्षण प्रकट हुए जो पागल कुत्ते के काटने के पश्चात् प्रकट हुआ करते हैं और पानी से डरने लगा तथा भयावह स्थिति पैदा हो गई। तब उस घर से दूर असहाय के लिए मेरा हृदय बहुत व्याकुल हुआ और दुआ के लिए एक विशेष ध्यान पैदा हो गया। प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि वह बेचारा कुछ घंटों के पश्चात् मर जाएगा। विवश होकर उसे बोर्डिंग से बाहर निकालकर एक पृथक मकान में दूसरों से अलग बड़ी सावधानी से रखा गया और कसौली के अंग्रेज़ डाक्टरों की ओर तार भेज दिया और पूछा गया कि इस स्थिति में उसका कोई उपचार भी है या नहीं उस ओर से तार द्वारा उत्तर प्राप्त हुआ कि अब इसका कोई उपचार नहीं किन्तु उस गरीब और घर से दूर बच्चे के लिए मेरे हृदय में बहुत ध्यान पैदा हो गया और मेरे मित्रों ने भी उसके लिए दुआ करने के लिए बहुत ही आग्रह किया क्योंकि इस घर से दूर होने की स्थिति में वह लड़का दया योग्य था तथा हृदय में यह भय पैदा हुआ कि यदि वह मर गया तो एक बुरे रूप में उसकी मृत्यु शत्रुओं के उपहास का कारण होगी। तब मेरा हृदय उसके लिए दर्द और व्याकुलता में ग्रस्त हुआ और विलक्षण ध्यान पैदा हुआ जो अपने अधिकार से पैदा नहीं होता अपितु केवल ख़ुदा की ओर से पैदा होता है और यदि पैदा हो जाए तो ख़ुदा तआला की आज्ञा से वह प्रभाव दिखाता है कि निकट है कि उस से मुर्दा जीवित हो जाए। निष्कर्ष यह कि उसके लिए ख़ुदा के प्रताप की अवस्था उपलब्ध हो गई और जब वह ध्यान चरमसीमा तक पहुँच गया और दर्द ने मेरे हृदय पर पूर्ण रूप से अधिकार जमा लिया तब उस रोगी पर जो वास्तव में मुर्दा था इस ध्यान के लक्षण प्रकट होने आरंभ हो गए और या तो वह पानी से डरता और प्रकाश से भागता था और या सहसा तबियत ने स्वास्थ्य की ओर मुख किया और उसने कहा कि अब मुझे पानी से डर नहीं लगता। तब उसे पानी दिया गया तो उसने बिना किसी भय के पी लिया अपितु पानी से वुज़ू करके नमाज़ भी पढ़ ली और पूरी रात सोता रहा और भयावह और पशुवत स्थिति जाती रही, यहां तक कि कुछ दिन तक पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया।" (हकीक़तुल वह्यी- पृष्ठ 480-481)

रूहानी ख़ज़ायन
'शिक्षा' (पुस्तक 'कश्ती नूह' से उद्धृत)
(अहमदियत की शिक्षाओं का सारांश)

समाप्ति

ये समस्त उपदेश उनका हम उल्लेख कर चुके हैं, इस का उद्देश्य है कि हमारी जमाअत ख़ुदा के भय में उन्नति करे और वह इस योग्य हो जाए कि ख़ुदा का आक्रोश जो धरती पर भड़क रहा है वह उन तक न पहुँचे ताकि इन प्लेग के दिनों में वे विशेष तौर पर सुरक्षित रखे जाएँ। **सच्चा संयम (आह! बहुत ही कम है सच्चा संयम)** ख़ुदा को प्रसन्न कर देता है और ख़ुदा साधारण तौर पर बल्कि निशान के तौर पर पूर्ण संयमी को संकट से बचाता है। प्रत्येक धोखेबाज़ या मूर्ख संयमी होने का दावा करता है परन्तु **संयमी वह है** जो ख़ुदा के निशान द्वारा संयमी सिद्ध हो। प्रत्येक कह सकता है कि ख़ुदा से प्रेम करता हूं परन्तु ख़ुदा से प्रेम वह करता है जिसका प्रेम आकाशीय साक्ष्य से सिद्ध हो। प्रत्येक कहता है कि मेरा धर्म सच्चा है, परन्तु सच्चा धर्म उस व्यक्ति का है जिस को इसी संसार में प्रकाश प्राप्त होता है। प्रत्येक कहता है कि मुझे **मुक्ति** प्राप्त होगी, परन्तु इस कथन में सच्चा वह व्यक्ति है जो इसी संसार में मुक्ति के प्रकाश देखता है। अतः तुम प्रयास करो कि ख़ुदा के प्यारे हो जाओ ताकि तुम्हारी प्रत्येक मुसीबत से सुरक्षा की जाए। पूर्ण संयमी प्लेग से सुरक्षित रहेगा क्योंकि वह **ख़ुदा की शरण** में है। अतः तुम पूर्ण संयमी बनो। ख़ुदा ने जो कुछ प्लेग के संदर्भ में कहा, तुम सुन चुके हो। वह एक आक्रोश की अग्नि है। अतः तुम स्वयं को उस अग्नि से बचाओ। जो मनुष्य सच्चे तौर पर मेरा अनुसरण करता है और उसके अन्दर कोई छल-कपट, आलस्य, लापरवाही नहीं है और न अच्छाई के साथ बुराई को मिलाता है उसकी रक्षा की जाएगी। परन्तु वह जो इस मार्ग में सुस्ती से क़दम उठाता है और संयम के मार्गों पर पूरे तौर पर क़दम नहीं उठाता या संसार पर गिरा हुआ है वह स्वयं को परीक्षा में डालता है। प्रत्येक पहलू से ख़ुदा के आदेशों का पालन करो। प्रत्येक मनुष्य जो स्वयं को बैअत करने वालों में शुमार करता है, उसके लिए अब समय है कि अपने धन से भी इस सिलसिले की सेवा करे। जो मनुष्य एक पैसे की हैसियत रखता है वह सिलसिले के कार्यों के लिए प्रति माह एक पैसा दे। जो मनुष्य प्रति माह एक रुपया दे सकता है वह प्रति माह एक रुपया अदा करे। क्योंकि लंगरखाने के ख़र्चों के अतिरिक्त धार्मिक कार्य-कलाप भी बहुत सा ख़र्च चाहते हैं। सैंकड़ों अतिथि आते हैं, परन्तु अभी तक धन की कमी के कारण अतिथियों के लिए यथायोग्य सुविधाजनक मकान उपलब्ध नहीं, चारपाइयों का प्रबंध नहीं, मस्जिद को बढ़ाने की आवश्यकता भी सामने खड़ी है, पुस्तकें लिखने और प्रकाशित करने का कार्य विरोधियों की अपेक्षा अत्यन्त पीछे है। ईसाइयों की ओर से जहां पचास हज़ार पत्रिकाएँ और धार्मिक अख़बार प्रकाशित होते हैं, हमारी ओर से निरन्तर एक हज़ार भी प्रति माह प्रकाशित नहीं हो सकता। यही कार्य है जिनके लिए प्रत्येक बैअत करने वाले को अपनी सामर्थ्य अनुसार सहायता करनी चाहिए ताकि ख़ुदा भी उनकी सहायता करे। यदि प्रति माह निरन्तर उनकी सहायता पहुंचती रहे, चाहे थोड़ी ही हो तो अपेक्षाकृत

उस सहायता से उत्तम है जो दीर्घ काल तक खामोश रह कर फिर किसी समय अपने ही विचार से की जाती है। प्रत्येक मनुष्य के प्रण का सत्य उसके सेवा भाव से पहचाना जाता है। प्रिय जनो! यह धर्म और उसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सेवा का समय है। **इस समय को ग़नीमत समझो** कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा। ज़कात देने वाले को चाहिए कि अपनी ज़कात इसी जगह भेजे और प्रत्येक मनुष्य फ़ुज़ूलखर्ची से स्वयं को बचाए और इस मार्ग में रुपया लगाए और हर हाल में अपनी सच्चाई का प्रमाण प्रस्तुत करे, ताकि ख़ुदा की अनुकम्पा और रूहुलकुदुस का पुरस्कार पाए। क्योंकि **यह पुरस्कार** उन लोगों के लिए तैयार है जो इस सिलसिले में दाख़िल हुए हैं। **हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** पर जो रूहुलकुदुस की आभा प्रकाशमान हुई थी, वह प्रत्येक आभा से बढ़कर है। रूहुलकुदुस कभी किसी नबी पर कबूतर के रूप में प्रकट हुआ और कभी किसी नबी या अवतार पर **गाय** के रूप में किसी पर **कछवे** या **मगरमच्छ** के रूप में प्रकट हुआ पर मनुष्य के रूप में प्रकट होने का समय न आया जब तक कि **इंसाने कामिल** अर्थात् हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का **प्रादुर्भाव न हुआ।** जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रादुर्भाव हो गया तो आप पर कामिल इन्सान होने के नाते रूहुलकुदुस के प्रकाश की शक्तिशाली आभा ने धरती से आकाश तक के स्थान को भर दिया था। इसलिए क़ुर्आनी शिक्षा **अनेकेश्वरवाद** से सुरक्षित रही। परन्तु चूंकि ईसाई धर्म के **पेशवा** पर रूहुलकुदुस अत्यन्त **निर्बल** रूप में प्रकट हुआ था अर्थात् **कबूतर** के रूप में। इसलिए अपवित्र रूह अर्थात् शैतान उस धर्म पर **विजयी हो गया।** उसने अपनी श्रेष्ठता और शक्ति इस प्रकार प्रदर्शित की कि एक भयानक **अजगर** की भांति आक्रमण सब पथ-भ्रष्टताओं से प्रथम नम्बर पर रखा है और कहा कि निकट है कि आकाश और धरती फट जाएं और टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ कि धरती पर यह एक बहुत बड़ा पाप किया गया कि **मनुष्य को ख़ुदा का बेटा बनाया।** क़ुर्आन के आरम्भ में भी ईसाई विचारधारा का खण्डन और इसका उल्लेख है। जैसा कि आयत "इय्याका नअबुदो" और "वलद्दाल्लीन" से समझा जाता है। क़ुर्आन के अन्त में भी ईसाई दृष्टिकोण का खण्डन किया गया है जैसा कि सूरह-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ - اللّٰهُ الصَّمَدُ - لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ (सूरह अलइख़लास-2-4)

से समझा जाता है। क़ुर्आन के मध्य में भी ईसाई धर्म के उपद्रव का उल्लेख है। जैसा कि आयत "तकादुस्समावातो यतफ़त्तरना मिनहो" (मरयम-91) से समझा जाता है और क़ुर्आन से स्पष्ट है कि जब से संसार की रचना हुई, ख़ुदा की बनाई हुई वस्तुओं की उपासना और धोखा व कुटिलता के मार्गों पर ऐसा बल कभी नहीं दिया गया। इसी कारण मुबाहले के लिए भी ईसाई ही बुलाए गए थे न कोई अन्य अनेकेश्वरवादी। और यह जो रूहुलक़ुदुस इस से पूर्व पक्षियों या जानवरों के रूप में प्रकट होता रहा, इसमें क्या रहस्य था। समझने वाला स्वयं समझ ले। इतना हम भी कह देते हैं कि यह संकेत था इस ओर कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इन्सानियत इतनी प्रबल है कि रूहुलक़ुदुस को भी इन्सानियत की ओर खींच लाई। अतः तुम ख़ुदा की ओर से भेजे गए **ऐसे नबी के अधीन होकर हिम्मत क्यों हारते हो।** तुम अपने वह आदर्श प्रदर्शित करो जो फ़रिश्ते भी आकाश पर तुम्हारी सच्चाई और पवित्रता से आश्चर्यचकित हो जाएँ और तुम्हारी सुरक्षा और सलामती के लिए प्रार्थना करें। तुम एक मृत्यु धारण करो ताकि तुम्हें जीवन प्राप्त हो। तुम तामसिक आवेगों से अपने अन्तःकरण को खाली करो

ताकि ख़ुदा उसमें प्रवेश करे। एक ओर से पक्के तौर पर परित्याग करो और एक ओर से पूर्ण संबंध स्थापित करो। **ख़ुदा तुम्हारी सहायता करे।**

अब मैं समाप्त करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मेरी यह शिक्षा तुम्हारे लिए लाभप्रद हो और तुम्हारे अन्दर ऐसा परिवर्तन हो कि तुम धरती के नक्षत्र बन जाओ और धरती उस प्रकाश की आभा से प्रकाशमान हो जो तुम्हें तुम्हारे ख़ुदा से प्राप्त हो। हे ख़ुदा स्वीकार कर, पुनः स्वीकार कर।

या इबादल्लाह उज़्क्किरोकुम अय्यामल्लाह व उज़्क्किरोकुम तक़्वलक़ुलूब इन्नहू मंय्याते रब्बहू मुजरिमन फ़इन्ना लहू जहन्नमा ला यमूतो फ़ीहा वला यहया फ़ला तुखलिदू इला ज़ीनतिद्दुनिया व ज़ूरिहा वत्ताक़ुल्लाहा वस्तईनू बिस्सबरे वस्सलात इन्नल्लाहा व मलाइकतहू युसल्लूना अलन्नबिय्ये या अय्युहल्लज़ीना आमनू सल्लू अलैहे व सल्लिमू तसलीमा अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन व बारिक वसल्लिम

प्लेग के बारे में भविष्यवाणी
कविता में

निशाँ अगरचै न दर इख्तियार कस बूदस्त
मगर निशाँ बदहम अज़ निशाँ ज़ दारम

यद्यपि निशान किसी के अधिकार में नहीं होते परन्तु मैं ख़ुदा की ओर से एक निशान का पता बताता हूँ।

कि आँ सईदज़ ताऊन निजात ख्वाहिद याफ़्त
कि जस्तो जुस्त पनाहे बचार दीवारम

अर्थात वही सौभाग्यशाली व्यक्ति ताऊन से सुरक्षित रहेगा जो झपट कर मेरी चारदीवारी के अन्दर शरण लेगा।

मरा क़सम बख़ुदावन्दे ख्वेश-औ-अज़मते ऊ
कि हस्त ईं हमा अज़ **वहिये पाक** गुफ़्तारम

मुझे अपने मालिक की और उसकी प्रतिष्ठा की क़सम है कि मेरी यह सब बातें पवित्र ख़ुदा की वह्यी से हैं।

चे हाजत अस्त ब बहसे दिगर हमीं का फ़ीस्त
बराए आंकि सियह **शुद दिलश** ज़ इन्कारम

किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसका दिल मेरे इन्कार के कारण गुमराह हो चुका हो किसी ओर बहस की क्या आवश्यकता, यही बात पर्याप्त है।

अगर दरोग़ बर आयद **हर आंचै वादए मन**
रवास्त गर हमा खीज़न्द बहरे पैकारम

जो वादा मैं करता हूँ अगर वह झूठा सिद्ध हो तो निस्संदेह वैध है कि सब मुझसे लड़ने के लिए उठ खड़े हों। **(समाप्त)**

सम्पादकीय

क्या यह मनुष्य के सामर्थ्य में है?

☆ ☆ ☆

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस
अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक - 18.12.2020
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्‌गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :-

हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन चल रहा था। आप रज़ी. की आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम बीमारी में जो सेवा थी उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोग बढ़ गया तो एक अवसर पर आप दो आदमियों के बीच सहारा लेकर हज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के घर से मस्जिद जाने के लिए निकले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाँव ज़मीन पर रेखा बना रहे थे अर्थात दुर्बलता के कारण आपके पैर नहीं उठ रहे थे। ये दो आदमी, एक तो अब्बास रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु थे तथा दूसरे हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु थे जिनका आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहारा लिया हुआ था।

हज़रत आमिर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत फ़ज़ल रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु तथा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने स्नान कराया तथा इन्हीं लोगों ने आपको क़बर में उतारा।

हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु से बैअत के विषय में विभिन्न कथन मिलते हैं। कुछ कथनों में यह है कि हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने पूरे विश्वास एवं श्रद्धा से तुरन्त हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की बैअत कर ली थी। कुछ लोग

इसके विरुद्ध लिखते हैं। अतएव हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मुहाजिरों तथा अन्सारियों ने हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की बैअत कर ली तो हज़रत अबू बकर रज़ी-अल्लाहु तआला अन्हु सिंहासन पर चढ़े तो उन्होंने लोगों की ओर देखा तो उनमें हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को न पाया। अन्सार में से कुछ लोग गए और हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को ले आए। हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा के बेटे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद, क्या तुम मुसलमानों की शक्ति का तोडऩा चाहते हो? हज़रत अली रज़ी. ने निवेदन किया, हे रसूलुल्लाह के ख़लीफ़:! पकड़ न करें, फिर उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की बैअत कर ली।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हु ने आरम्भ में हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की बैअत से भी संकोच किया था किन्तु फिर घर जाकर ख़ुदा जाने क्या विचार आया कि पगड़ी भी न बांधी तथा तुरन्त टोपी में ही बैअत करने को आ गए और पगड़ी पीछे मंगवाई। हेसा लगता है कि उनके दिल में विचार आ गया होगा कि यह तो बड़ा पाप है, इस कारण से इतनी जल्दी की, कि पगड़ी भी न बांधी अर्थात कपड़े भी पूरे नहीं पहने और जल्दी जल्दी आ गए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जो लोग यह आरोप लगाते हैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु पर कि हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफ़: होना चाहिए था उस समय, न कि हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को, इस बात को स्पष्ट करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

यदि हम यह मान भी लें कि सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु उन लोगों में से थे जिन्होंने दुनिया तथा इसके लाभ को प्रमुखता दी तथा वे अधिकारों का हनन करने वाले थे तो हेसी अवस्था में हम इस बात पर विवश होंगे कि फिर यह भी स्वीकार करें कि शेर-ए-ख़ुदा भी पाखंडियों में शामिल थे, नऊज़ुबिल्लाह, और जैसा कि हम उनके बारे में मानते हैं कि वे संसार को त्याग कर अल्लाह से लौ लगाने वाले न थे बल्कि वे दुनिया तथा इसकी समृद्धियों पर गिर पडऩे वाले तथा इसके एश्वर्य के चाहने वाले थे तथा इसी कारण से आपने काफ़िरों का साथ न छोड़ा अपितु चापलूसी करने वालों की भांति उनमें शामिल रहे तथा लगभग तीस वर्ष की अवधि तक तक़िय्या (गुप्त धारणा, कोई बात जो भय से कही जाए जबकि उसे कहने का मन न हो) धारण किए रखा। फिर जब सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु, अली रज़ी. की दृष्टि में अधिकारों का हनन करने वाले थे तो फिर क्यूँ हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु उनकी बैअत पर तय्यार हुए तथा क्यूँ उन्होंने अत्याचार, उपद्रव तथा दीन से विमुखता की धरती से दूसरे देश की ओर हिजरत न की। क्या अल्लाह की ज़मीन इतनी विस्तृत न थी कि वे उसमें हिजरत कर जाते जैसा कि यह तक़वा वालों की सुन्नत है। आज्ञाकारी इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखो कि वे हक़ की शहादत में कैसी शक्ति वाले थे . . . . वे आग में डाले गए तथा उपद्रवियों के भय से तक़िय्या धारण न किया। यह है

नेक लोगों का जीवन दर्शन कि वे तीर व तलवार से नहीं डरते तथा वे तक़िय्या को घोर पाप समझते हैं। हमें आश्चर्य है कि अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने यह जानते हुए भी कि सिद्दीक़ तथा फ़ारूक़ काफ़िर एवं अधिकारों का हनन करने वाले हैं, उन्होंने उनकी बैअत कैसे कर ली . . . . तथा पूरी श्रद्धा और निष्ठा से उन दोनों का आज्ञा पालन किया तथा उसमें न कभी उन्होंने दुस्साहस दिखाया और न ही किसी हीन भावना की अभिव्यक्ति फ़रमाई।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट कर दिया कि हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने कभी भी अपने से पहले ख़लीफ़ाओं का विरोध नहीं किया था बल्कि उनकी बैअत की, अन्यथा जो बातें तुम हज़रत अली रज़ी. के बारे में कहते हो कि उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की बैअत नहीं की, यह बात तो हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के स्तर को गिराती है, न कि बढ़ाने वाली है।

तीसरे ख़लीफ़: के दौर में हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की क्या सेवाएँ थीं इसके सम्बंध में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि जब हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उसामा रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की सेना को रवाना किया तो आपके पास बहुत कम लोग रह गए थे। इस पर बहुत से बद्दुओं ने मदीना पर हमला करने की योजना बनाई। इस पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने मदीने में आने वाले विभिन्न मार्गों पर मदीने के आस पास पहरेदार नियुक्त कर दिए जो अपने दस्तों के साथ मदीने के आस पास पहरे देते हुए रात व्यतीत करते थे। इन पहरेदारों के निगरानों में से हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु भी थे।

हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में कुछ यात्राओं की आवश्यकता होने पर हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को अमीर नियुक्त फ़रमाया था। अत: तारीख़-ए-तबरी नामक इतिहास में लिखा है कि जसर की घटना के अवसर पर, जो मुसमानों को ईरानियों के मुक़ाबले पर एक प्रकार की हानि उठानी पड़ी तो हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों से विचार विमर्श के बाद निश्चय किया कि आप स्वयं इस्लामी सेना के साथ ईरान की सीमा पर तशरीफ़ ले जाएँ तो आपने अपने पीछे हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को मदीने का गवर्नर नियुक्त किया।

हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त के दौर में उपद्रव एवं फ़साद हुआ तो हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु ने उसको दूर करने के लिए उनको महत्त्व पूर्ण सुझाव दिए। जब मिसरियों ने हज़रत उसमान रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के घर का घेराव कर लिया तथा इतनी कठोरता दिखाई कि खाने पीने से भी वंचित कर दिया। हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को सूचना मिली तो उन्होंने पानी की भरी हुईं तीन मशकें आपके घर रवाना कीं किन्तु उपद्रवियों के विरोध के कारण ये मशकें हज़रत उसमान रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के घर नहीं पहुंच रहीं थीं, इन मशकों को पहुंचाने के प्रयत्न में बनू हाशिम तथा बनू उमय्यिा के कई गुलाम ज़ख़्मी हुए अतएव अन्तत: पानी हज़रत उसमान रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु के घर पहुंच गया। हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को जब पता चला कि हज़रत उसमान रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की हत्या की योजना बन रही है तो आपने अपने बेटों इमाम हसन रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु तथा इमाम

हुसैन रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया कि अपनी तलवारें ले जाओ तथा हज़रत उसमान के द्वार पर खड़े हो जाओ और सावधान रहना कि कोई उपद्रवी आप तक न पहुंचने पाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उसमान रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की दुर्घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि एक दो दिन तो ख़ूब लूट मार का बाज़ार गर्म रहा परन्तु जब जोश ठंडा हुआ तो उन उपद्रवियों को अपने परिणाम की चिंता हुई तथा भयभीत हुए कि अब क्या होगा, अत: कुछ लोगों ने तो शाम देश का रुख़ किया तथा वहाँ जाकर स्वयं ही शोर मचाना शुरु कर दिया कि हज़रत उसमान शहीद हो गए और कोई उनका बदला नहीं लेता, कुछ लोग भाग कर मक्का के रास्ते में हज़रत ज़ुबैर और हज़रत आयशा से जा मिले और कहा कि कितना अत्याचार है कि इस्लाम का ख़लीफ़: शहीद किया जाए और मुसलमान चुप रहें। कुछ भाग कर हज़रत अली के पास पहुंचे तथा कहा कि यह कठिनाई का समय है इस्लामी शासन टूट जाने का भय है, आप बैअत लें ताकि लोगों का भय दूर हो तथा अमन एवं शांति स्थापित हो। जो सहाबी मदीने में उपस्थित थे उन्होंने भी सहमत होकर यह सुझाव दिया कि इस समय यही उचित है कि आप इस बोझ को अपने सिर पर रखें कि आपका यह कार्य अल्लाह की रज़ा एवं सवाब का कारण बनेगा। जब चारों ओर से आपको विवश किया गया तो कई बार के इंकार के बाद आपने विवशता पूर्ण इस कार्य को अपने ऊपर लिया तथा बैअत ली। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हज़रत अली रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु का यह काम बड़े विवेक पर आधारित था, यदि आप उस समय बैअत न लेते तो इस्लाम को इससे भी अधिक हानि पहुंचती जो आपके तथा हज़रत मुआविय: के बीच युद्ध से पहुंची।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज फिर में दोबारा अल-जज़ायर के अहमदियों के लिए भी तथा पाकिस्तान के अहमदियों के लिए भी दुआ की तहरीक करना चाहता हूँ, अल्लाह तआला उनको सुरक्षित रखे। अल-जज़ायर में भी प्रस्थितियाँ कठोर की जा रही हैं, वहाँ भी एक सरकारी वकील है जो बार बार मुक़दमें बना रहा है हमारे अहमदियों पर। पाकिस्तान में भी इसी प्रकार यातनाओं में डाला जा रहा है। अल्लाह तआला इन सब लोगों को जो कठिनाईयाँ उत्पन्न कर रहे हैं अथवा किसी प्रकार का विरोध कर रहे हैं, मान्सिक खेद का निशान बनाए तथा इन अहमदियों की स्थिति में जल्दी सुधार फ़रमाए, जो कठोर जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इनके लिए सुविधाएँ तथा सरलताएँ पैदा करे, परन्तु साथ ही मैं यह भी कहूँगा पाकिस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से, कि दुआओं की ओर जैसा ध्यान देने की आवश्यकता है उस तरह के ध्यान देने का अभी तक भी आभास नहीं है। अत: पहले से बढ़ कर तथा बहुत बढ़ कर दुआओं की ओर ध्यान दें। अल्लाह तआला हमें जल्द इन यातनाओं से निकाले तथा सुविधाएँ पैदा फ़रमाए और वास्तविक इस्लाम का सन्देश, हम स्वतंत्रता पूर्वक पाकिस्तान में भी तथा विश्व के हर एक छोर में पहुंचाने वाले हों।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम डा. ताहिर अहमद साहब रबवा, मुकर्रम हबीबुल्लाह मज़हर साहब, मुकर्रम बशीरुद्दीन अहमद साहब और मुकर्रमा अमीना अहमद साहिबा का शुभ वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अ: की नमाज़ के बाद इनके जनाज़े की नमाज़ गायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

☆ ☆ ☆

विश्व शान्ति के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला के विश्वव्यापी प्रयास (भाग-2)

(लेखक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद मुरब्बी सिलसिला, एम ए)

इस युद्ध में जो भयंकर विनाश और बरबादी हुई उससे हम सब परिचित हैं जिसमें सम्पूर्ण विश्व के लगभग पचहत्तर मिलियन लोगों के प्राण नष्ट हुए जिनमें अधिकांश निर्दोष जनता थी। यह युद्ध विश्व की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त होना चाहिए था। यह उन बुद्धिमत्तापूर्ण नीतियों को उन्नति देने का माध्यम होना चाहिए था जो कि समस्त दलों को न्याय पर आधारित उनके अनिवार्य अधिकार प्रदान करता। इस प्रकार विश्व में शान्ति स्थापित करने का माध्यम सिद्ध होता। उस समय विश्व की सरकारों ने किसी सीमा तक शान्ति क़ायम करने का प्रयत्न किया और संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की स्थापना की गई परन्तु यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महान और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पूरे नहीं किए जा सके और आज कुछ विशेष सरकारें स्पष्ट तौर पर ऐसे बयान देती हैं जिन से उनकी असफलता सिद्ध होती है।

न्याय पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय संबंध जो शान्ति स्थापित करने का एक माध्यम हों उनके संबंध में इस्लाम क्या कहता है ? पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया है कि यद्यपि हमारी जातियां और जातीय परिदृश्य हमारी पहचान का एक माध्यम हैं परन्तु वह किसी प्रकार की श्रेष्ठता के औचित्य का माध्यम नहीं हैं।

अत: पवित्र क़ुर्आन यह स्पष्ट करता है कि समस्त लोग समान हैं। इसके अतिरिक्त वह अन्तिम ख़ुत्बा (भाषण) जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया, उसमें आपस. ने समस्त मुसलमानों को नसीहत की कि सदैव स्मरण रखो कि किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर और न ही किसी ग़ैर अरबी को किसी अरबी पर कोई श्रेष्ठता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी कि एक गोरे को काले पर और न ही किसी काले को गोरे पर श्रेष्ठता है। अत: इस्लाम की यह एक स्पष्ट शिक्षा है कि समस्त जातियों और नस्लों के लोग बराबर हैं। यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि समस्त लोगों को बिना किसी भेदभाव अथवा द्वेष के समान अधिकार दिए जाने चाहिएं। यह एक बुनियादी और सुनहरी सिद्धान्त है जो विभिन्न गिरोहों और देशों के मध्य एकता और शान्ति की नींव डालता है।

बहरहाल आज हम देखते हें कि शक्तिशाली और निर्बल देशों के मध्य एक फूट और खाई है। उदाहरणतया संयुक्त राष्ट्र संघ में हम देखते हैं कि विभिन्न देशों के मध्य अन्तर किया जाता है और इसी प्रकार विश्व सुरक्षा परिषद में कुछ स्थायी और कुछ अस्थायी सदस्य हैं। यह विभाजन फूट और अशान्ति का एक आन्तरिक माध्यम सिद्ध हुआ है। अत: हम निरन्तर इस असमानता के विरुद्ध प्रदर्शनों पर आधारित विभिन्न देशों की रिपोर्ट सुनते रहते हैं। इस्लाम समस्त मामलों में पूर्ण न्याय और समानता का पाठ पढ़ाता है और इस प्रकार हम पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह आयत - 3 में एक और निर्देश पाते हैं। इस आयत में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि न्याय की मांगों को पूर्णतया पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि उन लोगों से

भी जिन्होंने घृणा और शत्रुता की समस्त सीमाओं को पार कर लिया हो
एक प्रश्न जो स्वाभाविक तौर पर पैदा होता है वह यह है कि इस्लाम किस प्रकार के न्याय की मांग करता है। सूरह अन्निसा आयत -126 में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि यदि तुम्हें अपने स्वयं के विरुद्ध या अपने माता-पिता या अपने प्रियजनों के विरुद्ध भी गवाही देनी पड़े तो न्याय और सच्चाई को क़ायम रखने के लिए तुम्हें अवश्य ऐसा करना चाहिए।" (ख़िताब हुज़ूर अनवर वैश्विक संकट और शांति पथ)

हालेंड पार्लियामेंट में भाषण

हुज़ूर अनवर फरमाते हैं: - "पवित्र क़ुर्आन की सूरह अन्नहल की आयत 127 में इस्लामी सरकारों को आदेश दिया गया है कि यदि उन पर कभी आक्रमण हो जाए तो वह केवल अपनी प्रतिरक्षा के तौर पर यथानुकूल उत्तर दें। अत: पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा बहुत स्पष्ट है कि दण्ड मूल अपराध के अनुसार हो न कि उस से अधिक।
सूरह अन्फ़ाल की आयत 62 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम्हारा शत्रु बुरी नीयत से तुम पर आक्रमण करने का इरादा रखता है परन्तु बाद में फिर उपेक्षा करते हुए सुलह का हाथ बढ़ाता है तो उसके प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार करते हुए परस्पर शान्तिपूर्ण मैत्री की ओर बढ़ो इस बात को न देखो कि उनकी नीयत कैसी है।

पवित्र क़ुर्आन की यह शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय अमन और सुरक्षा की स्थापना के लिए सुनहरी सिद्धान्त है। आज के विश्व में बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जहां कुछ देशों ने केवल कल्पना पर आधारित किसी देश के काल्पनिक अत्याचारों के विरुद्ध आतंकवादी कार्य-प्रणाली ग्रहण कर ली। मालूम होता है कि मानो वे इस सिद्धान्त का पालन कर रहे हों कि It is better to destroy them, before they destroy us «शत्रु पर आक्रमण कर दो ऐसा न हो कि वह पहल कर दे।» इस्लाम की शिक्षा तो यह है कि शान्ति की स्थापना के किसी भी अवसर को नष्ट न किया जाए चाहे उसकी आशा बहुत ही काल्पनिक क्यों न हो। पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह की आयत-9 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम उस से न्याय न करो। इस्लाम सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कैसी ही प्रतिकूल हों न्याय और इन्साफ का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। युद्ध की स्थिति में भी न्याय और इन्साफ की स्थापना बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा युद्ध के पश्चात् विजेता के लिए आवश्यक है कि वह न्याय से काम ले। और कभी भी अनुचित अत्याचार करने वाला न हो।

परन्तु आज हमें विश्व में सहनशीलता के ऐसे उच्च नैतिक मापदण्ड दिखाई नहीं देते, अपितु युद्ध की समाप्ति पर विजेता देश ऐसी पाबंदियां और प्रतिबंध देते हैं जो पराजित देश की उन्नति की संभावनाओं को सीमित करके उन क़ौमों की स्वतंत्रता और संप्रभुता को अवरुद्ध कर देते हैं। ऐसी कार्य-पद्धति अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में बिगाड़ का कारण है और उनका परिणाम असंतोष और नकारात्मक प्रभावों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वास्तविकता यह है कि स्थायी अमन तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक समाज के प्रत्येक स्तर

पर न्याय की स्थापना न हो जाए।

Peace Symposiums का आयोजन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की शांति के प्रयासों में एक peace symposium का आयोजन है जिस का आरम्भ आप ने साल 2004 ई में किया। ऐसे Symposiums न केवल ब्रिटेन, भारत बल्कि दुनिया के हर हिस्से में आयोजित किए जाते हैं, जहां जमाअत अहमदिया सार्वभौमिक की स्थापना हो चुकी है। इन कांफ्रेंसों में शांति और सद्भाव के विचार को बढ़ाने के लिए सभी वर्ग के लोग शामिल होते हैं। इन में से कुछ उदाहरण आपके सामने पेश हैं। (1) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 24 मार्च 2012 को नौंवे वार्षिक शांति सम्मेलन आयोजित बैयतुल फुतूह मोर्डन में " परमाणु युद्ध के विनाशकारी परिणाम और सही न्याय की आवश्यकता पर" बोलते हुए फरमाते हैं:

"मुझे याद है कि कुछ साल पहले इसी हॉल में शांति सम्मेलन के दौरान मैंने एक भाषण में दुनिया में शांति के तरीके और साधन पर विस्तार से प्रकाश डाला था और मैंने यह भी उल्लेख किया था कि संयुक्त राष्ट्र को कैसे काम करना चाहिए। बाद में हमारे बहुत प्रिय दोस्त लार्ड ईरक एयूबरी ने कहा कि यह भाषण तो संयुक्त राष्ट्र में सुनाया जाना चाहिए था। यह उनका उच्च हौसला था कि उन्होंने उच्च हौंसला और प्यार से इस बात का इज़हार किया। बहरहाल यह कहना चाहता हूँ कि केवल तकरीरें और भाषणों का कर लेना पर्याप्त नहीं और केवल इस बात से शांति नहीं हो सकता। दरअसल इस महत्त्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने की बुनियादी शर्त सभी मामलों में पूर्ण इंसाफ और न्याय है। कुरआन के सूर: नंबर 4 और आयत 136 हमें इस बारे में एक सुनहरा नियम और सबक बताती है।

इसमें बताया गया है कि न्याय की आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिएं चाहे आपको अपने ख़िलाफ, अपने माता-पिता के ख़िलाफ, अपने मित्रों और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ गवाही क्यों न देनी पड़े। यह वास्तविक न्याय है जिस में सामूहिक हितों के लिए निजी हितों का बलिदान कर दिया जाता।"

अगर हम इस सिद्धांत की समग्र समीक्षा करें तो हमें एहसास होगा कि अन्याय पूर्ण सुझाव मनवाने के तरीके जो धन और बलबूते के प्रभाव पर धारण किए जाते हैं छोड़ दिए जाने चाहिए। इसके बजाय प्रत्येक देश के प्रतिनिधि और राजदूतों को ईमानदारी के साथ और न्याय और समानता के सिद्धांतों का समर्थन की इच्छा के साथ आगे आना चाहिए। हमें हर प्रकार के पूर्वाग्रहों और भेदभाव को पूर्णता मिटाना होगा क्योंकि शांति का यही एकमात्र रास्ता है। अगर हम संयुक्त राष्ट्र महासभा या सुरक्षा परिषद की समीक्षा करें तो अक्सर हम देखते हैं कि वहाँ किए गए भाषणों और जारी किए जाने वाले बयानों की तो बहुत प्रशंसा की जाती हैं और सराहना की जाती है लेकिन यह सराहना व्यर्थ है क्योंकि मूल निर्णय तो पहले से ही हो चुके होते हैं। अत: जहां निर्णय बड़ी शक्तियों के दबाओ और प्रभाव के अधीन और न्याय और वास्तविक हक सच्चेनिर्णयों के ख़िलाफ किए जांए तो एसी तकरीरें खोखली और अर्थहीन हैं और केवल दुनिया को धोखा देने के काम आती हैं

तो अगर बड़ी शक्तियों ने न्याय से काम न लिया और छोटे देशों की वंचित होने की भावना को

समाप्त नहीं किया और उत्कृष्ट रणनीति न अपनाई तो स्थिति अंतत: हाथ से निकल जाएगी और फिर जो तबाही और बर्बादी होगी वह हमारी सोच और कल्पना से बढ़कर होगी बल्कि दुनिया के अधिकतर जो शांति के इच्छुक हैं वे भी इस तबाही की लपेट में आ जाएंगे। अत: मेरी हार्दिक इच्छा और आकांक्षा है कि बड़ी शक्तियों के नेता इस भयानक तथ्य को समझ जाएं और जो आक्रामक रणनीति अपनाने और अपनी महत्वाकांक्षाओं और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ताकत के प्रयोग के स्थान पर ऐसी रणनीति अपनाने की कोशिश करें जिनसे न्याय को बढ़ावा दिया जाए और इसे सुनिश्चित करें।

(2) इसी तरह सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बारहवें शांति सम्मेलन आयोजित दिनांक 14 मार्च 2015 ई स्थान बैयतुल फुतूग मार्डन में "विश्व शांति के लिए सुनहरा नियम" विषय पर ख़िताब करते हुए फरमाते हैं

"यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जब कभी और जहाँ भी कोई अपने घृणित अत्याचार और अन्याय की पुष्टि इस्लाम के नाम से करने की कोशिश करता है तो उसकी ज़रूर निंदा की जानी चाहिए और यह बात भी ठीक है कि ऐसे अत्याचार और अन्याय का इस्लाम की सच्ची और शांति वाली शिक्षा से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। हुज़ूर कहते हैं कि जैसा कि मैंने पहले भी कहा था कि मैं यह नहीं मानता कि मौजूदा परिस्थितियों में Policy makers और सरकारों द्वारा आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आवश्यक और प्रभावी कदम उठाए गए हैं।

"मेरे विचार में यह कहीं अधिक उपयोगी और प्रभावी होगा कि बड़ी शक्तियां स्थानीय सरकारों की मदद करें और उन्हें अपने भरोसा में लेते हुए तथा एक दूसरे पर भरोसा करने के विश्वास को मज़बूत करें और आपस के सहयोग के साथ एक व्यावहारिक रणनीति को बनाते हुए चरमपंथ और नफरत भरे विचारों को फैलने से रोकने की कोशिश की जानी चाहिए। और यह काम कहीं अधिक प्रभावी साबित होगा इस के स्थान पर यह बात कि सरकार स्थानीय विद्रोहियों को सैन्य प्रशिक्षण और हथियार प्रदान किए जांए। इस प्रकार की नीति केवल उन देशों में और अधिक शरारत और बुराई फैलाने का कारण हो सकती है, हालांकि हम ऐसे नकारात्मक उपायों के ख़तरनाक परिणाम अपनी आँखों के साथ देख चुके हैं।

कुछ समय पहले कुछ बड़ी शक्तियों ने सीरिया सरकार के विद्रोहियों को Military Training दी थी जिनके बारे में फिर यह खबरें आईं कि विद्रोहियों ने सैन्य प्रशिक्षण और आधुनिक हथियार प्राप्त करने के बाद आतंकवादी संगठनों में शामिल हो गए इसके बावजूद आज भी हज़ारों सीरियाई विद्रोहियों को तुर्की, कतर और सऊदी अरब में सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

मैं विश्वास रखता हूँ कि यह कहीं अधिक विस्तार योग्य होगा कि बड़ी ताकतें आपसी विश्वास पैदा करके आतंकवाद को समाप्त करने के लिए स्थानीय सरकारों को सहायता प्रदान करवाएं और यह मदद इस शर्त पर दी जानी चाहिए कि वे अपने देश की जनता के साथ न्याय की आवश्यकताओं को पूरा करेंगे और किसी भी तरह से उनके अधिकारों को नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा।

सारांक्ष यह है कि उग्रवाद को समाप्त करने के लिए जो कदम अभी तक उठाए गए हैं वे प्रभावी

साबित नहीं हुए अगर हम लीबिया के मामले पर नज़र डालें तो पाते हैं कि अब कुछ साल पहले ही कुछ शक्तियों ने जनरल गद्दाफी की सरकार को समाप्त करने के लिए स्थानीय विद्रोहियों की मदद की थी, लेकिन प्राप्त क्या हुआ? क्या उससे कुछ लाभ हुआ लीबिया की जनता के जीवन में कोई सुधार पैदा हुआ? बेशक नहीं, लेकिन इसके बजाय पूरा देश तबाह हो गया और दहशत गर्द लोगों के लिए breedin ground बन गया।

अहमदिया मुस्लिम पीस प्राइज़

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शांति की कोशिशों को और अधिक बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2009 ई से Peace Symposium ब्रिटेन अवसर पर ऐसे संगठनों या लोगों को जो दुनिया में शांति के प्रयास करते हैं चुन कर Ahmadiyya Muslim Peace Prize देना आरम्भ किया जिस में सम्मानित पुरस्कार के साथ, 10,000 पाउंड का नकद पुरस्कार है।

इस सिलसिले में सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ द्वारा सबसे पहला Ahmadiyya Muslim Peace Prize आदरणीय लार्ड एरिक एयूब्यूरे (Lord Eric Avebury) को उनकी ओर से मानवाधिकार की स्थापना के लिए लगातार किए गए प्रयासों को स्वीकार करते हुए वर्ष 2009 ई में दिया गया। जबकि सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने भारत के प्रांत महाराष्ट्र की आदरणीया सिंधू ताई सपकाल साहिबा Mother of Orphans को यह सम्मान पीस संगोष्ठी ब्रिटेन 2015 ई के अवसर पर आपके द्वारा अनाथों और बेसहारा बच्चों के विकास तथा उन्नति के लिए किए जाने वाली सेवाओं को सम्मान की दृष्टि से देखते हुए अपने मुबारक हाथों से दिया।

दुनिया के प्रमुखों के नाम ख़त

इसी तरह सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुनिया में शांति की स्थापना के लिए एक ओर प्रशंसनीय और प्रभावी प्रयास के अधीन दुनिया के धार्मिक और राजनीतिक शासकों को पत्र लिखे, जिस में आप ने उन सभी को यह समझाने की कोशिश की आज दुनिया विशेषकर मानवता को किस प्रकार घातक खतरों का सामना करना पड़ रहा है, साथ ही आप ने इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में यह भी बताया कि मानवता और दुनिया को बचाने के लिए हम सब पर क्या ज़िम्मेदारियां निहित हैं और ज़िम्मेदारियों को हमें किस तरीके से अदा करना चाहिए? इन में से कुछ पत्र संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

(1) इसराईल के प्रधानमंत्री को पत्र में आपने लिखा है:

मेरा आप से यह निवेदन है कि विश्व को एक विश्व युद्ध में झोंकने की बजाए विश्व को यथासंभव विनाश से बचाने का प्रयत्न करें। शक्ति द्वारा विवादों का समाधान करने के स्थान पर वार्तालाप के द्वारा उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम अपनी भावी पीढ़ियों को बतौर उपहार एक उज्ज्वल भविष्य दें, न कि हम उन्हें विकलांगताओं जैसे दोषों को उपहार दें।

(2) ईरान के इस्लामी गणराज्य के राष्ट्रपति को ध्यान:

आजकल विश्व में बहुत अशान्ति और बेचैनी है। बहुत से देशों में छोटे स्तर के युद्ध आरंभ हो चुके हैं जबकि अन्य स्थानों में महा-शक्तियां शान्ति स्थापित करने के बहाने हस्तक्षेप कर रही हैं। प्रत्येक देश किसी अन्य देश की सहायता या विरोध में प्रयासरत है परन्तु न्याय की मांगे पूर्ण नहीं की जा रहीं। मैं खेद के साथ कहता हूं कि यदि अब हम विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि एक और विश्व-युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है। बहुत से छोटे और बड़े देशों के पास परमाणु हथियार मौजूद होने के कारण परस्पर द्वेष और शत्रुता में वृद्धि हो रही है। ऐसी कठिन परिस्थिति में तृतीय विश्व-युद्ध भयानक रूप में निश्चय ही हमारे निकट है। जिस प्रकार कि आप जानते हैं कि परमाणु हथियारों के उपलब्ध होने का तात्पर्य यह है कि तृतीय विश्व-युद्ध एटमी युद्ध होगा। उसका अन्तिम परिणाम बहुत विनाशकारी होगा तथा ऐसे युद्ध के दूरगामी प्रभाव भावी पीढ़ियों के विकलांग एवं कुरूप पैदा होने का कारण होंगे।

(3) पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को लिखा:

हम सभी परिचित हैं राष्ट्र संघ की विफलता और 1932 ई. के आर्थिक संकट द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण बने थे। आज के अग्रगण्य अर्थशास्त्री यह कहते हैं वर्तमान और 1932 ई. के आर्थिक संकट में बहुत सी समानताएं हैं। हम यह देखते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं छोटे देशों के मध्य पुन: युद्ध का कारण बनी हैं और उन देशों में इन के कारण आंतरिक अशान्ति और असंतोष का वातावरण व्याप्त हो चुका है। इस स्थिति में अन्तत: कुछ ऐसी शक्तियां अनुचित लाभ उठाकर संसार की बागडोर सम्भाल लेंगी जो विश्व युद्ध का कारण बन जाएंगी। यदि छोटे देशों के परस्पर विवादों का राजनीति अथवा कूटनीति से समाधान नहीं ढूंढा जा सकता तो इस के कारण विश्व में नए गुटों और समूहों का जन्म होगा और यह स्थिति तृतीय विश्व युद्ध का पूर्वावलोकन प्रस्तुत करेगी। अत: मेरा यह विश्वास है कि इस समय विश्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाए यह अति आवश्यक और नितान्त अनिवार्य है कि हम विश्व को इस विनाश से सुरक्षित रखने के अपने प्रयासों में शीघ्र से शीघ्र तीव्रता पैदा करें। इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि मानवजाती परमात्मा जो कि एक है और हमारा स्रष्टा है को पहचाने, क्योंकि संकट और विपदाओं में मानवता के जीवित बचने को केवल यही सुरक्षित बना सकता है, वरन् यह संसार निरन्तर आत्म-विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता रहेगा।

(4) ब्रिटेन के प्रधान मंत्री के लिए लिखा:

मेरा यह निवेदन है कि प्रत्येक स्तर पर और दृष्टिकोण से हमें अनिवार्य रूप से प्रयास करना होगा ताकि नफ़रत की ज्वाला को शान्त किया जा सके। इस प्रयास की सफलता के पश्चात् ही हम भावी पीढ़ियों को उज्जवल भविष्य का आश्वासन दे सकते हैं परन्तु यदि हम इस कार्य में सफल न हुए तो हमारे मन में इस संबंध में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमाणु युद्ध के फलस्वरूप भावी पीढ़ियों को हर जगह हमारे कर्मों के भयानक परिणाम को भुगतना पड़ेगा और वे अपने पूर्वजों को पूरे विश्व को विनाश की ज्वाला में झोंकने के कारण कभी क्षमा नहीं करेंगी। मैं आपको पुन: स्मरण कराता हूं कि ब्रिटेन भी उन देशों में से है जो विकसित और विकासशील देशों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं और डालते हैं। यदि आप चाहें तो आप न्याय और

इन्साफ़ की मांगों को पूरा करते हुए विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। अत: ब्रिटेन तथा अन्य शक्तिशाली देशों को विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। अल्लाह तआला आपको और विश्व के अन्य नेताओं को यह सन्देश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

लीफ लेटस का वितरण

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपनी विश्व शान्ति की कोशिशों में दुनिया के प्रत्येक वर्ग को टारगेट करके लीफ लेटस का वितरण किया। और इस शांति मिशन के साथ प्रत्येक विशेष और साधारण व्यक्ति को जोड़ने की कोशिश की। आप ने किसी भी देश के साधारण वर्ग को इस्लाम की धार्मिक शिक्षाओं के प्रकाश में शांति के विषय पर आधारित विभिन्न लीफ लेटस वितरण करने की जमाअत अहमदिया को हिदायत फरमाई। आप की इस हिदायत की रोशनी में जमाअत अहमदिया के लाखों परवाने दुनिया के सारे क्षेत्रों में करोड़ों लीफ लेटस छपा कर बांट रहे हैं। और शांति के इस मिशन के साथ लोगों को जोड़ रहे हैं।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने 23 नवंबर, 2015 ई को हिल्टन होटल, ओडोबो टोकियों में सम्माननीय मेहमानों को संबोधित करते हुए फरमाया

"मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपनी पैठ और पहुंच को प्रयोग में लाते हुए विश्व में अमन और परस्पर एकता के लिए प्रयास करें। हमारा सामूहिक दायित्व है कि विश्व में जहां कहीं भी अशान्ति और तनाव है हम न्याय के लिए आवाज़ उठाएं और शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयास करें ताकि हम वैसे भयंकर युद्ध से सुरक्षित रह सकें जो आज से सत्तर वर्ष पूर्व लड़ा गया था, जिसके विनाशकारी प्रभाव कई दशकों पर छाए हुए थे अपितु आज तक महसूस किए जाते हैं। यद्यपि सीमित स्तर पर एक विश्वयुद्ध का प्रारंभ हो चुका है। परन्तु हमें चाहिए कि हम अपने दायित्वों को यथा समय निभाएं ऐसा न हो कि कहीं उसके प्रभाव फैलकर विश्व को अपनी लपेट में ले लें और वे रक्त बहाने वाले और घातक हथियार दोबारा प्रयोग हों जो हमारी भावी नस्लों को तबाह कर दें।

अत: आइए, सब मिलकर अपने दायित्वों को निभाएं। विरोधी संगठन बनाने की बजाए हम सब को एकमत होकर परस्पर सहयोग करना चाहिए। हमारे पास अब कोई और चारा नहीं। क्योंकि यदि तृतीय महायुद्ध नियमित रूप से आरंभ हो गया तो उसके परिणामस्वरूप आने वाला विनाश और बरबादी के सिलसिलों की कल्पना भी असंभव है। निस्सन्देह ऐसी स्थिति में अतीत के युद्ध इस की तुलना में बहुत साधारण महसूस होंगे।

मेरी दुआ है कि विश्व इस स्थिति की कठोरता को समझे। इससे पूर्व कि विलम्ब हो जाए, मानवजाति ख़ुदा तआला के सामने झुकते हुए उसके अधिकारों तथा आपसी अधिकारों को अदा करने लगे।

अल्लाह तआला उन्हें समझ और विवेक प्रदान करे जो धर्म के नाम पर अशान्ति का वातावरण पैदा कर रहे हैं तथा उन्हें भी जो अपने आर्थिक हितों के उद्देश्य८ से भौगोलिक एंव राजनीतिक युद्ध कर रहे हैं। काश उन्हें ज्ञात हो जाए कि उनके उद्देश्य कितने अनुचित और विनाशकारी हैं। ख़ुदा करे कि विश्व के हर क्षेत्र में चिरस्थायी शान्ति स्थापित हो। आमीन

☆ ☆ ☆

नूर अस्पताल क़ादियान

ख़लीफ़ाओं के ख़ुदाई नेतृत्व के अधीन अहमदिया मुस्लिम जमाअत मानवता की भलाई के लिए प्रयास कर रही है। यह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में की जाने वाली सेवाओं और प्रयासों के समान हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत अपनी स्थापना के समय से ही इस भलाई के कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेती आई है। हमारे मिश्नरी प्रत्येक स्थान पर मानवता को संमार्ग की ओर निमन्त्रण देते चले आए हैं। इस मार्ग में उन्होंने बहुत क़ुर्बानियाँ प्रस्तुत की हैं।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत दुनियाभर में स्कूलों का निर्माण, होम्योपैथी और अन्य क्लीनिक्स तथा अस्पताल जैसे नूर अस्पताल, फ़ज़्ल-ए-उमर अस्पताल और ताहिर हार्ट इंस्टिट्यूट का निर्माण कर के मानवता की सेवा कर रही है। हज़ारों-हज़ार ज़रूरतमंदों का बिना किसी भेद-भाव के उपचार हो रहा है। चिकित्सक मानवता की सेवा के लिए अपने समय की क़ुर्बानियाँ कर रहे हैं।

1917 ई० में अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत ने स्थानीय लोगों को चिकित्सकीय सहायता और स्वास्थ्य लाभ उपलब्ध कराने के लिए क़ादियान में नूर अस्पताल की स्थापना की। पिछले 100 वर्षों में नूर अस्पताल ने लोगों की बदलती ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए काफ़ी प्रगति कर ली है। 2017 में नूर अस्पताल की स्थापना को 100 वर्ष पूरे हुए।

इस अस्पताल का इतिहास अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो कि 1835 ई० में पैदा हुए, के मुबारक दौर तक जाता है। ऐसे समय में जब क़ादियान में कोई अस्पताल नहीं होता था आप अलैहिस्सलाम पूर्ण कृपालुता और खुले दिल से क़ादियान और आस-पास के लोगों को नि:शुल्क दवाइयां देते थे। आप फ़रमाया करते थे :

"To provide medical assistance to sick & patients is a work of great reward. A true believer should not be lazy or careless in these works."

नूर अस्पताल जमाअत अहमदिया का प्रथम एलोपैथिक अस्पताल है जो क़ादियान में स्थापित किया गया। इसके बाद जमाअत ने दुनिया के विभिन्न भागों में विशेषत: तीसरी दुनिया और अफ़्रीकन देशों में ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए अन्य अस्पताल स्थापित किए।

आज नूर अस्पताल अपने क्षेत्र में एक प्रसिद्ध और मान्य अस्पताल है। अहमदी डॉक्टर जिन्होंने विभिन्न चिकित्सकीय विभागों में Specialize किया है उन्होंने इस अस्पताल में सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। अस्पताल मरीज़ों की सहायता के लिए नवीन उपकरणों से लैस है। यहाँ के डॉक्टर न केवल चिकत्सकीय सहायता देते हैं अपितु अपने मरीज़ों का विशेष ध्यान रखते हैं और उनके शीघ्र स्वास्थ्य के लिए ख़ुदा से दुआ भी करते हैं क्योंकि हमारी आस्था है कि डॉक्टर तो केवल इलाज कर सकते हैं परन्तु स्वास्थ्य तो अल्लाह ही देता है। इस ईमान (विश्वास) के कारण अस्पताल ने भयानक

बीमारियों से मरीज़ों के चमत्कारिक रूप से ठीक होने का अवलोकन किया है।

आज नूर अस्पताल में निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध हैं:

ENT, Ophthalmic, Orthopedic, Ultrasonography, Dental, Physiotherapy, X-ray & ECG, Cardiology, Nephrology, Laboratory Dialysis Center, Homeopathic Department.

नूर अस्पताल विभिन्न Healthcare specialties उपलब्ध करवा रहा है जैसे cardiology, ophthalmology, orthopedics, Pediatrician, Lung specialist, neurologist etc.

नूर अस्पताल में मरीज़ों की देख-भाल के लिए चौबीस घंटे emergency service और paramedical facilities उपलब्ध हैं जैसे Laboratory, X-ray, E.C.G, TMT Ambulances service। नूर अस्पताल में कुल स्टाफ़ की संख्या 98 है। 4 अहमदी डॉक्टर हैं, 6 Specialized visiting Doctors. नूर अस्पताल मुफ़्त में होम्योपैथी का उपचार भी उपलब्ध कराता है जो बहुत उपयोगी और सस्ता है। जमाअत ने हिंदुस्तान के विभिन्न शहरों और गाँव में होम्योपैथी डिस्पेंसरियां स्थापित की हैं जिन में नि:शुल्क इलाज होता है।

(शोबा ख़िदमत-ए-खल्क़ मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया क़ादियान)

☆ ☆ ☆

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-26) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

.......इसके बाद ख़ुदा ने कई संकेत दिखाए लेकिन इस दुआ की स्वीकारिता प्लेग से अधिक प्रकट हुई जिसने1902 ई० में ज़ोर पकड़ कर जमाअत के विकास में एक क्रांतिकारी रूप उत्पन्न कर दिया और लोग इस जमाअत में अधिकता से फ़ौज दर फ़ौज सम्मिलित होने आरंभ हुए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अंतिम पुत्र और उसकी मृत्यु

उसी वर्ष अर्थात 1899 ई० में हमारे सबसे छोटे भाई मुबारक अहमद का जन्म हुआ। मुबारक अहमद वह अंतिम लड़का था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर पैदा हुआ। इस से पहले अपनी दूसरी शादी से आपके घर में तीन बेटे जीवित थे अर्थात् एक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब जो 1899 ई० में पैदा हुए और 1914 ई० से जमाअत के इमाम और ख़लीफ़ा हैं। दूसरा इस पत्रिका का विनीत लेखक जो 1893 ई० में पैदा हुआ और तीसरे प्रिय मुकर्रम मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब जो 1895 ई० में पैदा हुए और जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि आपने लिखा है कि आपके सभी बच्चे ख़ुदाई ख़ुश ख़बरियों के अंतर्गत पैदा हुए थे अर्थात प्रत्येक बच्चे के जन्म से पहले आपको ख़ुदाई इल्हाम के द्वारा बच्चे के जन्म की सूचना दी गई थी। अत: 1899 ई० में जब मुबारक अहमद का जन्म हुआ था तो आप को ख़ुदा की ओर से यह इल्हाम हुआ कि यह लड़का आकाश से आता है और आकाश की ओर ही उठ जाएगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस इल्हाम की व्याख्या यह कि या तो यह लड़का विशेष रूप से पवित्र और नेक और आध्यात्मिक मामलों में प्रगतिशील होगा या वह बचपन में ही फौत हो जाएगा। अत: अंत में वर्णन की गई परिस्थिति सही निकली और आपके जीवनकाल में ही अर्थात 1907 ई० में इस बच्चे की मृत्यु हो गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने बच्चों से बहुत प्यार करते थे और मुबारक अहमद को सबसे छोटा बच्चा होने के नाते स्वाभाविक रूप से दूसरों की तुलना में प्यार और करुणा का अधिक भाग प्राप्त था, इसलिए आप उनकी मृत्यु से बहुत दुखी थे। क्योंकि आप का वास्तविक संबंध ख़ुदा के साथ था इसलिए उन्होंने इस दु:ख में धैर्य और विश्वास का एक उच्च उदाहरण दिखाया और दूसरों को भी धैर्य और विश्वास रखने की सलाह दी यहां तक कि जो लोग इस अवसर पर अपना दुख और सहानुभूति व्यक्त करने के लिए आए थे उनका बयान है कि उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे इस तरह से बात करते थे कि मानो हम पर आघात हुआ है और आप तसल्ली देने वाले हैं। इस अवसर पर आपने मुबारक अहमद की क़ब्र के लिए कुछ कविताएँ भी लिखीं जो आपके दिल की भावनाओं की एक बेहतरीन तस्वीर हैं। इनमें से दो कविताएँ उदाहरण के रूप में नीचे दी गई हैं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

जिगर का टुकड़ा मुबारक अहमद जो पाक शक्ल और पाक ख़ू था
वह आज हमसे जुदा हुआ है हमारे दिल को हज़ीं बना कर

बरस थे आठ और कुछ महीने कि जब ख़ुदा ने उसे बुलाया
बुलाने वाला है सबसे प्यारा उसी पे ए दिल तो जां फ़िदा कर

लाहौर के बिशप को मुक़ाबले का चैलेंज

1900 ई० में लाहौर में एक प्रसिद्ध पादरी डॉक्टर लीफ़राए होते थे और सम्पूर्ण पंजाब के ईसाइयों के उच्च अधिकारी और लीडर थे। यह साहिब दूसरे धर्मों के विरुद्ध क्रूर पालिसी के समर्थक थे और इसी उद्देश्य से उन्होंने मुसलमानों को यह निमन्त्रण दिया था कि मसीह के मुक़ाबले पर अपने रसूल की मासूमियत (सच्चाई) सिद्ध कर के दिखाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो उन अवसरों की तलाश में रहते थे आप ने तुरंत बिशप साहिब मौसूफ़ के इस चैलेंज को स्वीकार कर के उनके मुक़ाबले पर एक विज्ञापन प्रकाशित किया जिस में इस बात पर खुशी ज़ाहिर की कि अभी अधिक समय नहीं गुज़रा था कि शेख़ मुहम्मद बख़्श वर्णित का अकेला लड़का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने वालों में सम्मिलित हो गया और अब वह ख़ुदा के फ़ज़ल से एक निष्ठावान अहमदी हैं और उनकी माता और बीवी बच्चे भी अहमदियत में सम्मिलित हो चुके हैं। (सिलसिला अहमदिया- पृष्ठ- 87-88)

☆ ☆ ☆

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325
JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES
Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081
Guddu
Book Store
All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools
Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.
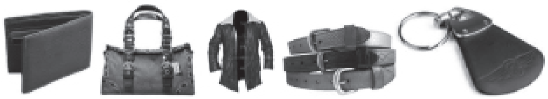
70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

दुनिया के बारे में चार रोचक बातें जो आप शायद नहीं जानते

नईमुल हक़ कुरैशी, मुरब्बी-ए-सिलसिला

हमारी दुनिया के बारे में कई ऐसी बातें हैं जो हमारे ज़हन में इस कदर बस गई हैं कि हम उनके बारे में कभी सवाल नहीं करते. हम मान लेते हैं कि जो हम जानते हैं वो सही होगा. लेकिन ऐसा ज़रूरी नहीं.

दुनिया से जुड़े तथ्यों के बारे में लिखने वाले वैज्ञानिक मैट ब्राउन अपनी किताब "एवरीथिंग यू नियू अबाउट प्लानेट अर्थ इज़ रॉन्ग" (धरती के बारे में जो भी आप जानते हैं वो ग़लत है) में ऐसी कुछ बातों का ज़िक्र करते हैं जो आपको अपनी जानकारी पर सवाल करने के लिए बाध्य कर देते हैं. उन्होंने दुनिया के बारे में बीबीसी के साथ चार रोचक बातें साझा कीं.

1. 2060 वर्ग किलोमीटर का नो मैन्स लैंड

ज़मीन, समुद्र तट, ताक़त और व्यवसाय को लेकर आपस में लड़ने वाले देशों के बीच पृथ्वी पर कई जगह 'नो मैन्स लैंड' होने की जानकारी आपको होगी.

अंतरराष्ट्रीय क़ानून के अनुसार ये दो देशों की सीमाओं के बीच का खाली इलाक़ा होता है जिसे कोई भी देश क़ानूनी तौर पर नियंत्रित नहीं करता है. हालांकि इस पर क़ानूनी दावा किया जा सकता है. लेकिन अफ्रीका में एक जगह है जिस पर कोई भी देश अपना अधिकार नहीं चाहता. बीर ताविल नाम का ये इलाक़ा 2,060 वर्ग किलोमीटर का है और मिस्र और सूडान की सीमाओं के बीच है.

ये इलाक़ा 20वीं सदी की शुरुआत में अस्तित्व में आया जब मिस्र और सूडान ने अपनी सीमाएं कुछ इस तरह से बनाईं कि ये इलाक़ा दोनों में से किसी का भी नहीं रहा.

बीर ताविल सूखाग्रस्त इलाक़ा है और यहां की ज़मीन बंजर है. लिहाज़ा इस पर दावा कोई नहीं करना चाहता. लेकिन इस इलाक़े ने कई लोगों को अपनी तरफ आकर्षित भी किया है.

2014 में अमरीका के वर्जीनिया के एक किसान ने यहां एक झंडा लगा कर खुद को "उत्तरी सूडान के राज्य" का गवर्नर घोषित कर दिया. उनकी चाहते थे कि उनकी बेटी राजकुमारी बने.

2. दुनिया का चक्कर लगाने वाला पहला व्यक्ति?

क्या पुर्तगाली खोजकर्ता फर्डिनेंड मैगलन दुनिया का चक्कर लगाने वाले पहले व्यक्ति थे और क्या उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े समंदर को अपना नाम दिया था?

ऐसा नहीं है. हालांकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि 1480 में जन्मे फर्डिनेंड मैगलन पहले यूरोपीय थे जिन्होंने प्रशांत महासागर को पार किया था.

1519 में मैगलन अपने दल के साथ समंदर के रास्ते स्पाइस द्वीप खोजने के लिए निकले थे. कई देशों से गुज़र कर आख़िर तीन साल बाद ये दल उसी जगह लौटा जहां से वो चला था.

हालांकि स्पेन से चली इस यात्रा को पूरा करने की ख़ुशी मनाने के लिए कम ही लोग ज़िन्दा बचे थे. 270 लोगों के चालक दल के साथ शुरु हुई ये यात्रा जब ख़त्म हुई तो मात्र 18 लोग ही जीवित बचे थे. यात्रा के दौरान मैगलन की भी मौत हो गई थी.

इस यात्रा के दौरान साल 1521 में मैगलन फिलीपीन्स के पूर्वी तट पर पहुंचे. वहां के मूल निवासी उन्हें सीबू द्वीप ले कर गए. मैगलन और उनके चालक दल के सदस्य सीबू में रहने वालों के अच्छे दोस्त बन गए. इतनी गहरी दोस्ती हुई कि मैगलन अपने दोस्तों को पड़ोसी द्वीप में रहने वाले उनके दुश्मनों के आक्रमण से बचाने के लिए तैयार हो गए.

उन्होंने हमला करने की तैयारी की और टुकड़ी का नेतृत्व मैगलन ने खुद किया . लेकिन जल्द ही मैगलन घायल हो गए. उन्हें ज़हर में डूबा एक तीर लगा जिसके बाद उनकी मौत हो गई.
मैगलन के साथ गए लोग स्पाइस द्वीप खोजने के बाद उसी रास्ते वापस लौटना चाहते थे लेकिन अपना रास्ता बदल कर वो छोटे रास्ते के ज़रिए स्पेन लौटै. मैगलन ने इस रास्ते को प्रशांत महासागर कहा लेकिन इसे देखने वाले वो पहले यूरोपीय नहीं थे.
सालों बाद स्पेन के खोजकर्ता वास्को नूनेज़ डी बालबोआ पनामा से होते हुए प्रशांत सागर के किनारे पहुंचे और अपनी तलवार को हवा में लहरा कर उन्होंने इसे खोजने का दावा किया.

प्रशांत महासागर

3. समंदर के किनारे ज़मीन होती है?
हम ये मानते हैं कि पानी से भरे समंदर के दूसरे छोर का शायद पता न चल सके लेकिन इसका कम से कम एक किनारा ज़रूर होता है.
कई समंदर तो चारों तरफ से ज़मीन से घिरे होते हैं, जैस कि भूमध्य सागर और काला सागर. कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सागर कहां महासागर में मिल जाते हैं पता नहीं चलता लेकिन ऐसे में द्वीपों की माला को जोड़ कर देखा जाए तो इसकी जानकारी भी लगाई जा सकता है. लेकिन एक ऐसा समंदर है जिसके किसी किनारे कोई ज़मीन नहीं है. ये है सारगास्सो सागर. ये अटलांटिक सागर के पश्चिम में है और उत्तर अटलांटिक में एक तरफ को मुड़ती लहरें ही इसकी सीमा बनाती हैं.
अटलांटिक की मुड़ती लहरों के कारण सारगास्सो सागर का पानी शांत रहता है.

☆ ☆ ☆

मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि] ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 26) अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

बचपन और जवानी

...मैं जिस ज़माने में चिकित्सा विद्या पढ़ता था उन दिनों मुझ को मुतनब्बी (प्राचीन अरबी साहित्य की एक पुस्तक) पढ़ने का भी विचार आया। अत: में मुफ्ती सअदुल्लाह साहब की सेवा में उपस्थित हुआ। बहुत दर्द के साथ मैंने उनकी सेवा में निवेदन किया कि मुझको आप एक अध्याय पढ़ा दिया करें। उन्होंने बहुत रूखे शब्दों में यह कहा कि हमारे पास समय नहीं है। मैंने कहा अच्छा, अब हम उसी समय पढ़ेंगे जब आप हमसे निवेदन करेंगे। मैं मकान पर आया और मैंने हकीम साहब से निवेदन किया कि मैं ज्ञान सीखना पसंद नहीं करता। उन्होंने कहा क्यों मैंने कहा ज्ञान से क्या लाभ है आप मुझे कोई सबसे अच्छा ज्ञान बताएं कि ज्ञान से क्या परिणाम मिलेगा। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने से शिष्टाचार उत्पन्न होते हैं। हकीम साहब ने कहा कि बात क्या है तनिक हमें बताओ तो सही। मैंने कहा मुफ्ती सअदुल्लाह साहब के पास गया था उनसे कुछ पढ़ना चाहता था उन्होंने बड़े रूखे शब्दों से कहा कि हमारे पास समय नहीं है। हकीम साहब ने क्लीनिक में से एक कागज़ उठाकर मुफ्ती सअदुल्लाह साहब के नाम एक पर्चा लिखा कि जब आप कचहरी से फारिग़ हो जाएं तो उसी रास्ते से आते हुए यहां पधारें और मुझ से मिलते हुए जाएं। पर्चा आदमी के हाथ में भिजवा दिया और मुफ्ती साहब कचहरी से उठकर सीधे हकीम साहब के पास आए। मुझको हकीम साहब ने पहले से कह दिया था कि तुम अपनी कोठरी में चले जाओ। मुफ्ती साहब वहां पधारे तो हकीम साहब ने कहा कि अगर मैं पढ़ना चाहूं तो आपको मेरे पढ़ाने के लिए कुछ समय मिल सकेगा? मुफ्ती साहब ने बड़े उत्साह पूर्वक कहा कि हां समय बहुत मिल सकता है और हम जिस समय के लिए आप कहें फुर्सत निकाल सकते हैं। हकीम साहब ने कहा अगर कोई हमारे पीरो-मुर्शिद पढ़ना चाहें? मुफ्ती साहब ने कहा उनको तो जहां वह चाहें हम स्वयं जाकर पढ़ा दिया करेंगे। थोड़ी देर के बाद हकीम साहब ने मुझको बुलाया मैं जब आया तो मुझको आते हुए देखकर मुफ्ती साहब हंस पड़े और कहा कि आओ साहब हम अब आप से निवेदन करते हैं कि आप हम से पढ़ें। मालूम हुआ कि हदीस में जो आया है कि विद्यार्थी के लिए फरिश्ते पर बिछाते हैं यह बहुत सही है। ख़ुदा तआला की कृपा से उन्होंने मुझे पढ़ाना शुरू कराया। हम कुछ नखरा भी करते रहे मगर यह शिकायत में अब तक करता हूं कि बावजूद इसके कि मैं बड़े-बड़े विद्वानों की सेवा में जाता था किसी ने न तो शिष्टाचार की शिक्षा दी और न किसी पुस्तक का परामर्श दिया, न भविष्य में आने वाली आवश्यकताओं से सूचित किया।

एक बार विद्यार्थियों में बहस हुई कि अहले कमाल (अर्थात वे जो अध्यात्मिकता में बहुत उन्नति कर जाते हैं) अपने कमाल किसी को बताते हैं या नहीं? मेरा दावा था कि अहले कमाल तो अपना कमाल दिखाने और बताने के लिए तड़पते हैं मगर कोई सीखने वाला नहीं मिलता, शेष विद्यार्थियों का कहना था कि सीखने

वाले बहुत हैं मगर वह सिखाते ही नहीं। मैंने कहा तुम यूं तो मानते नहीं और ना तुम हारना जानते हो, कोई साहिबे कमाल बताओ उसके पास चलकर उसी से निर्णय करवाते हैं। सब ने सर्वसम्मति से कहा के यहां अमीर शाह साहब एक साहिबे-कमाल व्यक्ति हैं। उनका एक बगीचा शहर के बीच में था सब विद्यार्थी उनके मकान पर चले गए वह एक लकड़ी के तख्त पर तकिया लगाए लेटे हुए थे और पास ही धरती पर एक छोटी सी चटाई बिछी हुई थी। जो हमारे बड़े-बड़े विद्यार्थी और अधिक योग्य थे वे तुरंत सबसे पहले चटाई पर बैठ गए शेष बहुत से विद्यार्थी धरती पर ही बैठ गए। क्योंकि मुझको धरती पर बैठने की बिल्कुल भी आदत न थी और अब भी मुझे बड़ी नफरत होती है। मैं सामने की एक कच्ची दीवार के पास खड़ा रहा। जब सब बैठ गए तो अमीर शाह साहब ने अत्यंत तिरस्कार पूर्वक कहा- ओ मुल्लो! किस लिए आए हो? मैंने निवेदन किया एक मुक़द्दमा है जिसमें यह सब लोग मुद्दई और मैं मुद्दआ अलैहि हूं या मैं मुद्दई हूं और यह सब मुद्दआ अलैहि हैं आप से निर्णय करवाना चाहते हैं। तब उन्होंने मुझसे कहा कि तुम खड़े क्यों हो? मैंने कहा कि चटाई बहुत छोटी है जो हमारे योग्य विद्यार्थी थे वे बैठ गए अब कोई जगह नहीं इसलिए मैं खड़ा हूं उन्होंने कहा तुम हमारे पास आ जाओ। मैं तुरंत तख्त पर बैठकर उनके पास जा बैठा। विद्यार्थियों का तो उसी समय फैसला हो गया परंतु उन्होंने मुकद्दमा सुनकर साफ शब्दों में मुझसे कहा कि तुम सच्चे हो और यह सब गलत हैं। मैंने कहा बस निर्णय हो गया अब हम जाते हैं।

मैं जब उठकर चलने लगा तो उन्होंने मुझको फिर बिठाया और स्वयं उठकर एक करीब की कोठरी में गए वहां से एक हाथ की लिखी हुई मोटी किताब ले आए। मैंने उसको देखा तो वह अमलीयात (तंत्र-मन्त्र) की किताब थी। मुझसे कहने लगे कि मेरी सारी उम्र का सरमाया यही है और मैं यह किताब तुमको देता हूं। मैंने कहा मैं तो विद्यार्थी हूं अभी पढ़ता हूं मुझको इसकी आवश्यकता नहीं। यह सुनकर उनकी आंखों में आंसू भर आए और कहने लगे कि हम तुमको देते हैं और तुम लेते नहीं, यह लोग मांगते हैं और हम उनको देते नहीं। फिर भी जब मैं उठने लगा तो उन्होंने कहा कि हम एक बात 'अमलीयात' के बारे में बताते हैं उसको सुन लो। जब कोई व्यक्ति तुम्हारे पास किसी काम के लिए आए तो तुम को चाहिए कि तुम ख़ुदा झुक जाओ और यों दुआ करो कि ख़ुदाया मैंने उसको नहीं बुलाया तूने स्वयं भेजा है, जिस काम के लिए आया है अगर वह काम तुझको करना स्वीकार नहीं तो जिस गुनाह के कारण मेरे लिए तूने यह तिरस्कार का सामान भेजा है मैं उस गुनाह से तौबा करता हूं। फिर भी दोबारा यदि तुम्हारी इस दुआ मांगने के बाद वह व्यक्ति हठ करे तो दोबारा अल्लाह तआला के दरबार में दुआ मांग कर उसको कुछ लिख दिया करो। मुझको अमीर शाह साहब के बताए हुए इस नुक्ता ने आज तक बड़ा लाभ पहुंचाया मगर उन विद्यार्थियों ने तनिक भी ध्यान न दिया और उनको कुछ भी पता न चला कि उन्होंने क्या बता दिया। जब वहां से बाहर निकले तो विद्यार्थियों ने मेरे बारे में कहा कि उसको 'हुब्ब का अमल' (अर्थात मोहब्बत का मन्त्र) आता है उसने खड़े होकर उन पर मोहब्बत का अमल डाला और वह उसमें काबू आ गए और इसीलिए यह हमेशा बड़े-बड़े अमीरों और सम्माननीय लोगों में रहता है और सब उसकी खातिर करते हैं। यहां मैं 2 वर्ष तक हज़रत हकीम साहब की सेवा में उपस्थित रहा

ओर बड़ी मुश्किल से 'क़ानून'[1] का अमली भाग पूर्ण किया। सनद और अनुमति लेने के बाद छुट्टी मांगी कि अब मैं अरबी की पूर्णता और हदीस पढ़ने के लिए जाता हूँ। आप ने मुझे मेरठ और दिल्ली जाने का परामर्श दिया और अत्यंत प्रेमपूर्वक कहा कि हम उचित खर्चा भी इन दोनों शहरों में तुम्हें भेजा करेंगे। जब मैं मेरठ पहुंचा तो हाफिज़ अहमद अली साहब कोलकाता को चले गए थे और मौलवी नज़ीर हुसैन मुजाहिदीन को रुपया पहुंचाने के मुकद्दमा में पकड़े गए थे। इन दोनों से एक अक्षर पढ़ना भी नसीब न हुआ (यद्यपि फिर अंत में एक समय मैंने हाफिज़ अहमद अली साहब सहारनपुरी से बहुत कुछ लाभ उठाया परंतु वह विद्यार्थी जीवन न था) और मैं भोपाल पहुंच गया। (मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन पृष्ठ 87-95) **शेष......**

***

1 एक विशेष ज्ञान की पुस्तक

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H.O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۚ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

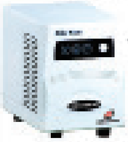

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

LIYAKAT ALI

Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۚ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(एक ऐसा नबी जिसने अंतिम युग में लोगों को एकत्र करना था)

अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

अंतिम युग में एक आध्यात्मिक व्यक्ति के आने की भविष्यवाणी प्रत्येक धर्म में पाई जाती है जिसने धर्म के नवीनीकरण के लिए आना था। मुसलमान एक इमाम महदी और मसीह की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मसीह व महदी मौऊद के अवतरण की भविष्यवाणी स्वयं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की है।

इस संबंध में जमाअत अहमदिया की क्या आस्था है, इसके बारे में विस्तार से यहां मालूम किया जा सकता है। ये कुछ पृष्ठ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद इमाम महदी व मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी, उनके आने का समय, इसी प्रकार आपके पवित्र जीवन, विरोधियों के खिलाफ़ आपको प्राप्त सहायताएं और आप की जमाअत क्व भविष्य में मिलने वाली उन्नतियों को उजागर करने वाले हैं।

आपका जीवन और आपका कार्य :-

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम 13 फ़रवरी 1835 ई० को हिंदुस्तान के एक छोटे से क़स्बे क़ादियान में पैदा हुए। आप एक प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखते थे। आप अलैहिस्सलाम का बचपन से ही अल्लाह तआला के साथ गहरा संबंध था। आप को युवावस्था के आरंभ से ही इल्हाम, रोया और कश्फ़ (तन्द्रावस्था) और सच्चे स्वप्न आने आरंभ हो गए थे।

आपके पिता आपको एक सरकारी नौकरी में देखना चाहते थे जो आपके परिवार को आर्थिक रूप से बेहतर सहयोग दे सकती थी, जबकि आप इस सांसारिक पेशे को एक कैद के समान मानते थे इस का कारण यह था कि आपका अल्लाह तआला और आध्यात्मिकता से लगाव और इस में और अधिक उन्नति करने की रुचि। यही कारण है कि अपने ख़ाली समय में आप पवित्र क़ुरआन पर विचार करते थे और मानवता की सेवा पर ध्यान केंद्रित करते थे और अधिकतर ज़रूरतमंदों की मदद करते थे। इसी प्रकार आप अपने आस-पास के ईसाई पादरियों के साथ वार्तालाप और विचार विमर्श करते और शास्त्रार्थ के द्वारा अपने प्रिय धर्म इस्लाम की रक्षा करते थे।

जून 1876 ई० का समय आपके पिता की मृत्यु के कारण आपके लिए बहुत कठिन रहा और मृत्यु से पहले ही आपको अल्लाह तआला की ओर से अपने पिता की मृत्यु के बारे में इल्हाम हुआ था। आप अपने पिता की मृत्यु के कारण अत्याधिक दु:ख की स्थिति में थे और आप अपने परिवार की परेशानियों के बारे में सोच कर भी काफी चिंतित थे और धन की कठिनाई की चिंता भी आप को परेशान कर रही थी। क्योंकि आप अल्लाह तआला के प्रिय थे, इसलिए अल्लाह ने एक और इल्हाम किया :-

"क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है?" (अज़-ज़ुमर आयत - 37)

इस इल्हाम ने आपके दिल को शांति से भर दिया और आपका दिल ईमान (विश्वास) से भर गया और आप आश्वस्त हो गए कि अल्लाह तआला हमेशा आपकी सहायता करेगा। 1868 या 1869 ई० में आपको एक और इल्हाम हुआ।

ख़ुदा ने मुझे संबोधित कर के कहा कि "मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे।" इतिहास साक्षी है कि अल्लाह तआला के इस इल्हाम ने वास्तविक रूप लिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास दुनियाभर से लोग पहुंचे और प्रत्येक जाति-नस्ल के लोग आए इसी प्रकार अमीर और ग़रीब भी पहुंचे और यह सिलसिला आज तक चल रहा है।

मूसलाधार इल्हामों और स्वप्नों का यह सिलसिला जारी रहा यहां तक के 1882 ई० में आपको एक इल्हाम हुआ जिसने यह बात स्पष्ट कर दी कि आप ही वह चयनित अस्तित्व है जो ख़ुदा की ओर से निर्धारित किए गए हैं और आप ही मसीह मौऊद हैं इसी प्रकार आप ने ही अल्लाह तआला की इच्छा को पूरा करना है।

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रथम पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया, अहमदियत के लिए एक महत्वपूर्ण और बहुत बड़ा कदम थी। इस पुस्तक में न केवल अहमदियत को दृढ़ता प्रदान की अपितु इस्लाम को भी ठीक आवश्यकता के समय दुनिया के समक्ष मज़बूती के साथ प्रस्तुत किया। बराहीन-ए-अहमदिया के प्रकाशन के समय इस्लाम विभिन्न विरोधी शक्तियों और विभिन्न धर्मों की ओर से हमलों का शिकार था जिसमें ईसाइयत भी सम्मिलित है। बराहिन-ए-अहमदिया ने पढ़ने वालों को इस्लाम अहमदियत के विरुद्ध होने वाले आरोपों का तर्कपूर्ण उत्तर दिया। यह पुस्तक अपने अंदर पवित्र क़ुरआन की वास्तविकता और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के तर्क एकत्र रखती है।

वर्ष 1889 ई० में आप अलैहिस्सलाम को एक और इल्हाम हुआ

उसने इस सिलसिले को स्थापित करते समय मुझे फ़रमाया कि ज़मीन में गुमराही का तूफ़ान बरपा है तू इस तूफ़ान के समय में यह नाव तैयार कर। जो व्यक्ति इस नाव में सवार होगा वह डूबने से मुक्ति पाएगा और जो इंकार में रहेगा उस के लिए मृत्यु निश्चित है। (सब्ज़ इश्तेहार 1 दिसंबर 1888 ई० पृष्ठ 24)

निस्संदेह जो लोग तुम से बैअत (निष्ठा की प्रतिज्ञा) करते हैं वह अल्लाह की बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथ पर है। इस इल्हाम के बाद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक सामान्य घोषणा प्रकाशित की, वह पढ़ें।

"मुझे आदेश दिया गया है कि जो लोग सत्याभिलाषी हैं वे सच्चा ईमान और सच्ची ईमानी ज़िन्दगी और ख़ुदा के मार्ग का प्रेम सीखने के लिए और दुष्टप्रवृति और आलस्य और ग़द्दाराना जीवन छोड़ने के लिए मुझ से बैअत करें।"

आरंभिक बैअत की आवाज़ पर उन लोगों ने तुरंत उत्तर दिया जिन्होंने पहले ही यह मान लिया था कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद वास्तविक रूप से वादा किए गए मसीह थे और स्वयंख़ुदा तआला ने आप को निर्धारित किया था। बैअत का प्रथम आयोजन 23 मार्च 1889 ई० को लुधियाना में हुआ जिसमें अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना की गई। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि॰] प्रथम व्यक्ति बने जिन्होंने आपके हाथ पर

बैअत की। 1890 ई० के अंत तक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब को निरंतर इल्हाम हुए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नासरा, जिनके पुन:आगमन के मुसलमान और ईसाई दोनों क़ायल हैं वह एक प्राकृतिक मौत मर चुके हैं और यह कि उन के पुन:आगमन का अर्थ यह था कि एक व्यक्ति हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विशेषताओं में प्रकट होगा और यह कि वह स्वयं ही मौऊद मसीह अलैहिस्सलाम हैं।

80 से अधिक पुस्तकें और दस हज़ार पत्र लिखने के बाद, सैंकड़ों लेक्चर देने और असंख्य शास्त्रार्थों में व्यस्त होने के बाद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम 26 मई 1908 ई० को मृत्यु को प्राप्त हो गए। फिर भी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक के रूप में उन की विरासत निरंतर चल रही है। आज समस्त संसार में वह एक ऐसा अस्तित्व है जिसने अपने जीवन की प्रत्येक सांस के साथ अपने प्रिय स्वामी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण से अथाह प्रेम का प्रदर्शन किया है।

निशान एवं भविष्यवाणियाँ (SIGNS AND PROPHECIES)

ख़ुदा तआला की ओर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में दिखाए जाने वाले वे आकाशीय निशान जिन का वादा किया गया था अत्यंत वर्णन योग्य हैं जिन में से अधिकतर ख़ुदाई निशान हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को 1876 ई० में वह्यी (ईशवाणी) का सिलसिला आरंभ हुआ और समय के साथ-साथ यह श्रेणीबद्ध रूप से बढ़ता चला गया। उनकी समस्त वह्यी अपने समय के अनुसार पूर्ण होती गईं जिस में से कुछ आपके जीवन में पूर्ण हुईं और आज भी पूर्ण होती चली जा रही हैं। अल्लाह तआला आप अलैहिस्सलाम को समस्त कठिनाइयों और विरोध के बावजूद प्रगति पर प्रगति देता चला जा रहा है। आप अलैहिस्सलाम के मानने वालों के बारे में दुआ की स्वीकार्यता के असंख्य निशान प्रदर्शित हुए। उन में से बहुत से ऐसे निशान हैं जिन में बहुत से ऐसे लोग सम्मिलित हैं जो मौत की बीमारी से ग्रसित थे और लाइलाज थे लेकिन आप अलैहिस्सलाम की दुआओं के कारण स्वथ्य हुए। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने कुछ क़ुदरती निशान जो आपदाओं का रूप रखती हैं वे भी प्रदर्शित किए। आप ने फ़रमाया कि यह समस्त निशान केवल और

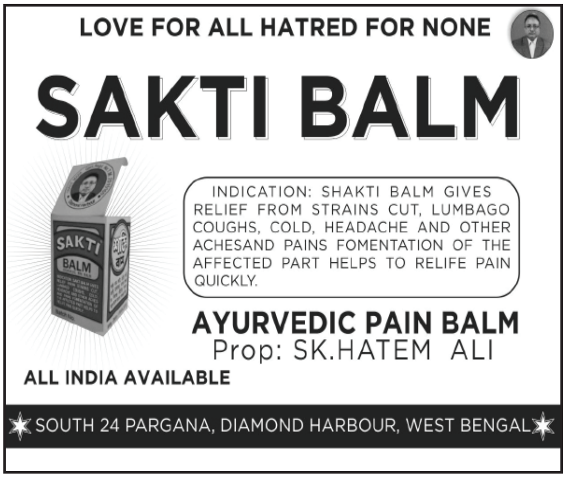
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
SAKTI BALM
INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.
AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE
SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

INDIA MOVES
ON
EXIDE
M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)
Cell :9440996396,9866531100

SWARAJ
SINCE 1974
सलाम मोटर्स
अधिकृत विक्रेता
स्वराज ट्रेक्टर: सेल्स व सर्विस ब्यावर
मो. यूसुफ काठात
9460458032
अताउल्लाह खान
8696714040
शोरूम : मसूदा रोड, चुंगी नाका के पास, ब्यावर

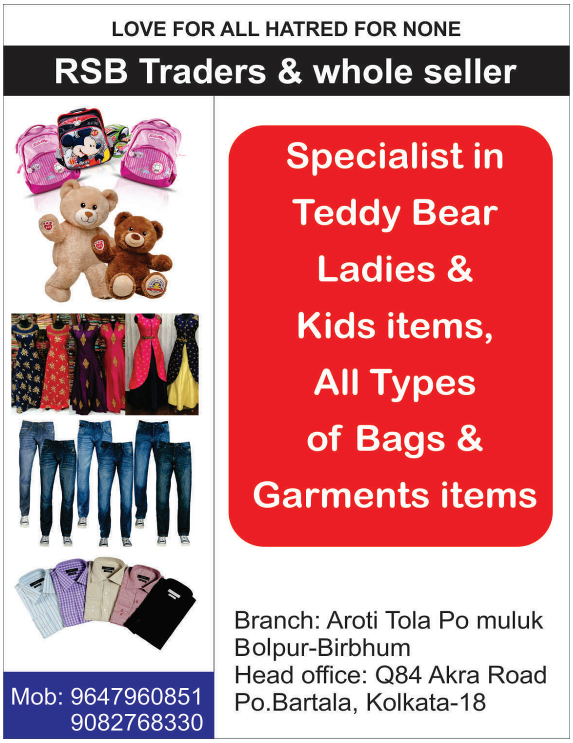
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
RSB Traders & whole seller
Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items
Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18
Mob: 9647960851
9082768330

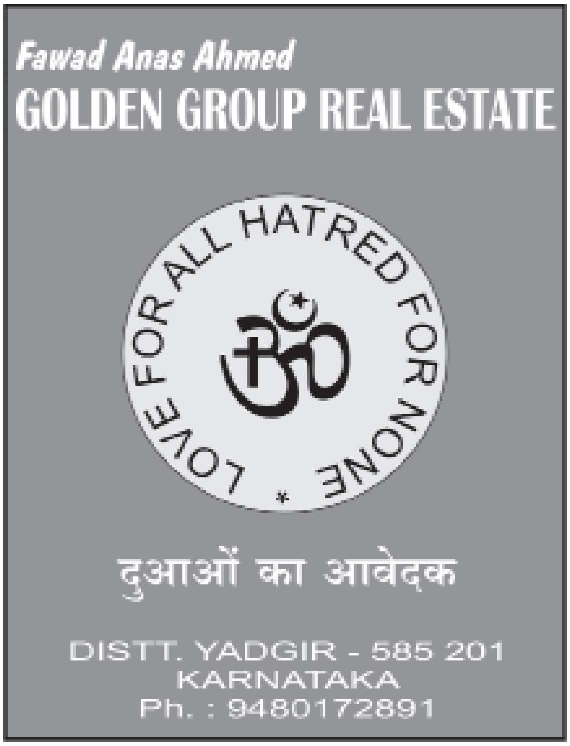
Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891